www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-5* *May 2025***

पीर मुहम्मद मूनिस– एक गुमनाम पत्रकार

डॉ0 संजय कुमार सहनी

असिस्टेंट प्रो., इतिहास विभाग, सबडिविजनल गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज, बेनीपुर, दरभंगा

विश्व स्तर पर सत्याग्रह का प्रयोग कर अपनी छाप छोड़ने वाले महात्मा गाँधी राजकुमार शुक्ल के द्वारा जिस पत्र के बुलावे पर चंपारण में, बिहार की धरती पर किसानो की समस्या से दो–चार होने के लिए आए थे। उस पत्र को लिखने वाले चंपारण के साहसी, निडर, स्वतंत्रता सेनानी एवं प्रतिभाशाली शिक्षक कोई और नहीं बल्कि पीर मुहम्मद मूनिस थे। सही मायनों में मूनिस को इतिहास में जो जगह मिलनी चाहिए, वास्तव में उसे मिला नहीं, जबकि जंग–ए–आजादी की लड़ाई में अपना जीवन दांव पर लगा देने वाले पीर मुहम्मद मूनिस देश के सच्चे सिपाही थे। जी हां, एक ऐसा नाम जो अधिकांशतः गुमनामी में रहा और उनके कार्यो को इतनी प्रमुखता नहीं दी गई जिनके वे वास्तविक उत्तराधिकारी थे। चंपारण सत्याग्रह की कोई भी चर्चा बेतिया के साहसी, अभिमानी पत्रकार पीर मुहम्मद मूनिस के बिना पूरी हो ही नहीं सकती। इनका जन्म 1894 ई0 में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। उन्होंने भारत में हिन्दु मुस्लिम के बीच सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखने के लिए चंपारण के किसानों की समस्या को उजागर करना अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। उसकी पत्रकारिता का सौंदर्य शास्त्र उस समय एक सामाजिक आंदोलन का वाहक बन गया। गुलामी के युग में जन्मे पीर मुहम्मद मूनिस ने इन्कलाब का रास्ता चुना और पूरे दृढ़ विश्वास के साथ अपनी लेखनी के माध्यम से ब्रिटिश शासन की नींव हिला दी।[1]

1917 ई0 में चंपारण में किसान तीन कठिया पद्धति 3/20 के कारण एवं लगान वृद्धि की वजह से परेशान थे।[2] पीर मुहम्मद मूनिस ने अपनी पत्रकारिता के द्वारा चंपारण में किसानों पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ बराबर दैनिक समाचार पत्रों एवं अन्य पत्रिकाओं में लिखते रहते थे। जिनके कारण चंपारण के किसानों की दयनीय अवस्था के बारे में देश के अन्य भागों में लोगों को जानकारी मिली। ब्रिटिश दस्तावेजों के अनुसार पीर मुहम्मद मूनिस वास्तव में एक साहसी, निडर और खतरनाक पत्रकार है, जिन्होनें अपने संदिग्ध पत्रों के माध्यम से बिहार के चंपारण जैसे पिछड़े इलाकों के किसानों का कष्ट, दुःख, शोषण और अत्याचार से बाहरी लोगों को परिचित कराया एवं यही नहीं गांधीजी जैसे सत्याग्रही को राजकुमार शुक्ल के माध्यम से चंपारण, बिहार आने के लिए प्रेरित किया।

पीर मुहम्मद ''मूनिस'' तख़ल्लुस (उपनाम) से कविता या अपना लेख लिखता था। मूनिस अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ होता है– मददगार, साथी, कामरेड।[3] अपने नाम की सार्थकता उन्होनें जीवन प्रर्यन्त सिद्ध किया। जैसा नाम वैसा काम। पीर मुहम्मद मूनिस बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संस्थापको में से एक थे। सोनपुर में 1919 में प्रथम हिन्दी सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए पंडित जगन्नाथ चतुर्वेदी ने कहा कि ''यहां के मुसलमान भी हिन्दी से प्रेम रखते और हिन्दी पढ़ते लिखते है इनमें सबसे पहले मि0 हसन का नाम याद आता है। बेतिया के पीर मुहम्मद मूनिस और मुजफ्फरपुर के लतीफ हुसैन हिन्दी के प्रेमी ही नहीं हिन्दी के लेखक भी है।''[4] मूनिस बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के 15वें अध्यक्ष भी चुने गये थे। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था। उनके लेखन में इतालवी राष्ट्रवादी और राजनेता गैरीबाल्डी एवं रूस के उपन्यासकार तथा लियो टॉल्सटॉय की झलक मिलती थी।

गाँधी जी के चंपारण आने से पूर्व पीर मुहम्मद मूनिस इंडिगो करखानों के पास के किसानों कि समस्या के मुद्दों पर अपनी लेखनी चलाई थी, नतीजा यह हुआ था कि देहाती क्षेत्रों में यह बात फैल चुकी थी कि गाँधीजी, जिन्होनें दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों को आंदोलित किया था, वे चंपारण में व्याख्यान देने आ रहे है। इस बात की पुष्टि 4 मार्च 1916 को बिहार स्पेशल ब्रांच इंटेलिजेंस द्वारा प्रकाशित रिर्पोट से होती है।

गाँधीजी के चंपारण आने से पूर्व पीर मुहम्मद मूनिस कानपुर से प्रकाशित होने वाले पत्र ''प्रताप'' के लिए लिखा करते थे। जिसका संपादन गणेश शंकर विधार्थी के द्वारा किया जाता था। इस हिन्दी साप्ताहिक पत्र ''प्रताप'' में चंपारण की पीड़ित प्रजा का दुख नियमित रूप से पीर मुहम्मद मूनिस देशवासियों को सुनाते थे।

वे प्रायः ''दुःखी', 'दुःखी आत्मा', या 'दुःखी हृदय' आदि छद्म नामों से लिखा करते थे। उन्होंने 17 फरवरी 1916 को 'प्रार्थना पत्र', 16 अप्रैल 1917 को 'चंपारण की दुर्दशा' नामक शीर्षक से आलेख छपा। ''प्रार्थना'' शीर्षक से छपे आलेख को पर्चा बनाकर प्रताप के द्वारा वितरित किया गया। इस पर्चे में चंपारण की प्रजा से यह प्रार्थना कि गई थी कि वे अपनी शिकायतों को सरकार के समक्ष रखने के लिए सबूत एकत्र करने के प्रयास में लेखक का सहयोग करे। जिनके पास किसी भी प्रकार का प्रमाणिक कागज–पत्तर हो तो, वे लेखक के पास भेज दे। इस पर्चे ने पूरे चंपारण सहित अन्य भागों में बबाल खड़ा कर दिया।[5]

चंपारण में नील के सैकड़ों कारखानों से लगभग पूरा जिला पटा था। ये कारखाने यूरोपियन के हाथ में आ चूके थे। अंग्रेज हर तरह से स्थानीय सामंती वर्ग की जगह ले चुके थे। हण्टर के दस्तावेजों से पता चलता है कि जमीन का लगान मालिक की जाति के हिसाब से तय होता था। ऊँची जाति वालों को छोटी जाति वालों कि तुलना में कम लगान देना पड़ता था। ऐसे मामलों की भरमार थी। जहां एक ही जैसी जमीन के लिए ब्राह्मणों और राजपूतों को दुसाध या किसी अन्य छोटी जाति कि तुलना में एक तिहाई लगान ही देना पड़ता था।6 पड़ोस के सारण जिले में ब्राह्मण, राजपूत और अन्य कई बड़ी जातियों के लोगों के पास गांव की सबसे अच्छी जमीनें होती थी, तो वहीं कोइरी, कुर्मी या चमार जैसी अन्य निचली जातियों के मुकाबले 50–75 फीसदी कम लगान पर ऊँची जातियों को जमीनें हासिल थी। इससे यह पता चलता है कि सामाजिक विषमता की जड़ें बहुत मजबूत थी, और उन्हें समाज के हर क्षेत्र में देखा जा सकता था। इस विकट समस्या को वीर, निडर, साहसी पत्रकार पीर मुहम्मद मूनिस ने अपने धारदार कलमों से सार्वजनिक किया।

'प्रार्थना' शीर्षक नामक पत्र के आलोक में 1916 ई0 के बिहार–उड़ीसा पुलिस एब्सट्रैक्ट में इस बाबत दर्ज सूचना कुछ इस प्रकार है। 'शिकारपुर के दारोगा से पर्चे की प्रतियां प्राप्त हुई है' शिक्षक पीर मुहम्मद मूनिस, हरवंश सहाय, बथुआ के पशुपति लाल 'प्रताप' को नियमित रूप से समाचार भेजते है। यह भी अफवाह है कि दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों को आंदोलित करने वाले मि0 गाँधी भाषण देने चंपारण, बिहार पहुंच रहे हैं। लेफ्टिनेंट गवर्नर सर चार्ल्स बेली के आदेश से इस पर्चे को जब्त कर लिया गया था और पीर मुहम्मद मूनिस समेत स्कूल के कुछ अध्यापकों को बर्खास्त कर दिया गया। तिरहुत के कमिश्नर ने भी अपनी सरकारी रिपोर्ट में 'चंपारण में असंतोष' शीर्षक नामक लेख से भड़काने के लिए दो व्यक्तियों को खासतौर से जिम्मेदार ठहराया। एक पीर मुहम्मद मूनिस जो प्रतिबंधित पर्चे का लेखक है, और कानपुर से प्रकाशित 'प्रताप' में नियमित रूप से अपने आलेख भेजता है। जिसमें चंपारण के किसानों की समस्या का उल्लेख होता है। दूसरा व्यक्ति है चनपटिया के समीप गांव सतवरिया का राजकुमार शुक्ल नाम का है जो किसानों की समस्या को सभी नेताओं के बीच पहुँचाता है।[7]

इस पूरे प्रकरण पर 'प्रताप' के 3 अप्रैल 1916 के अंक में मूनिस ने ''बिहार सरकार का अनुचित कार्य' शीर्षक नाम से धमाकेदार रिर्पोट प्रकाशित कराया। जिसनें सबके होश उड़ा दिये। इस लेख में पीर मुहम्मद मूनिस ने बिहारी नेताओं को धिक्कारते हुए उन्होंने लिखा कि– 'बिहार के नेता जिस प्रकार अपने सिर पर चक्की पिसते देख रहे है, उससे उनमें पुंसत्व की कमी स्पष्ट दिखाई पड़ती है। क्या यह ढ़ंग उन्हें शोभा देता है? माननीय ब्रजकिशोर प्रसाद बाबू भी आजकल चुप हैं। हम चाहते हैं कि बाबू ब्रजकिशोर जी इस मुद्दे को अपने हाथ में ले, क्योंकि हमें मजहरूल हक, मि0 सच्चिदानंद सिंहा से अधिक उम्मीद नहीं है। बिहार के पत्र–बिहारी, एक्सप्रेस, पाटलिपुत्र आदि भी अपने जिम्मेदारी एवं कर्तव्य पर जरूर विचार करे। क्योंकी मूनिस की नजरों में इन पत्रों को किसानों कि हालात पर जैसा लिखना चाहिए था, वैसा नहीं लिख रहे थे'।[8]

इसके अलावे भी पीर मुहम्मद मूनिस ने किसानों के उपर हो रहे अत्याचार के विरूद्ध अनेक बार लिखा।

1. 30 अप्रैल 1917 को महात्मा गाँधी के आने पर ''चंपारण में कर्मवीर का आगमन'' का लेखन।
2. जून 1917 को ''चंपारण में तीन कठिया प्रथा और चंपारण के नीलहे गोरे'' का लेखन।
3. 14 अगस्त 1917 को ''चंपारण में फिर अत्याचार'' पर निबंध का लेखन।
4. 30 अगस्त 1917 को ''चंपारण में नादिर शाही'' जैसी रिर्पोट से ''प्रताप'' के पन्ने को भरकर किसानों की समस्या को उजागर किया गया।

1916 में लखनऊ कॉन्फ्रेंस में ब्रजकिशोर बाबू और राजकुमार शुक्ल की मुलाकात गाँधीजी से होती है। इसी भेंट के दौरान चंपारण के किसानों पर चर्चा होती है, राजकुमार शुक्ल ने चंपारण के किसानों के शोषण के संबंध ा में जो दस्तावेज पढ़े थे, उसे लिखने वाला कोई और नहीं बल्कि पत्रकार पीर मुहम्मद मूनिस ने ही तैयार किया था। यह पत्र प्रधानाचार्य, पटना कॉलेज, पटना एवं इतिहाकार के. के. दत्ता को मूनिस के घर से प्राप्त हुआ था। इस पत्र के आलोक में गाँधीजी ने कहा कि बिना चंपारण गये मैं कुछ नहीं कह सकता। अंततः गाँधीजी 1917 में चंपारण आते हैं। मुजफ्फरपुर, मोतिहारी होते हए बेतिया पहुचें। वहाँ हजारीमल धर्मशाला में ठहरे। 23 अप्रैल 1917 को पांच बजे शाम में पैदल ही पीर मुहम्मद मूनिस की माँ से मिलने उनके घर गये। घर पर हजारो लोगों की भीड़ थी। गांधी का मूनिस के प्रति लगाव ने यह साबित कर दिया कि वे आजादी के सच्चे मुजाहिद है। उनका पूरा जीवन जंग–ए–आजादी के लिए है। जहाँ मूनिस के मित्रों ने महात्मा को एक अभिनंदन पत्र दिया।

गाँधी की चंपारण यात्रा में मूनिस ने गांधीजी को भरपूर सहयोग दिया। वे सभी साथियों के रहने और खाने का प्रबंध करते थे। इस बात की जानकारी वैसे लोगों की सूची से मिलती है, जिसे ब्रिटिश सरकार ने गाँधीजी को सहयोग करने वाले लोगों को चिन्हित करने के लिए बनाया था। इस सूची में कुल 32 लोग थ। जिसमें मूनिस का नाम 10वें न. पर था।[9]

बेतिया के सब डिवीजनल ऑफिसर डब्ल्यू0 एच0 लुईस ने चंपारण आंदोलन पर अपनी विस्तृत रिर्पोट में पीर मुहम्मद मूनिस के बारे में अपना स्पष्ट मूल्यांकन प्रस्तुत किया है। उन्होंने मूनिस को ''शिक्षित वर्गो तथा रैयतों के बीच की कड़ी'' की संज्ञा दिया। वे रैयतों की ओर से रैयत नेता खोंडाराय के साथ मिलकर नील फैक्ट्रियों के मुकदमें भी देखा करते थे। पहले तो मूनिस को राज0 एच0 ई0 स्कूल से बरर्खास्त किया गया। फिर उनकी सारी संपति जब्त कर ली गई।

जून 1918 में मारपीट के एक फर्जी मुकदमें में फंसाकर 23 सितंबर 1918 को 6 माह की कठिन कारावास की सजा दी गई। 30 सितंबर 1918 के अंत में 'प्रताप' ने इस पर 'पीर मुहम्मद मुनिस जेल मेंः सनसनी फैलाने वाला मुकदमा' शीर्षक से रिर्पोट प्रकाशित की थी। इन सबके बाद भी मूनिस हार नहीं माने, वे लगातार चंपारण में किसानों कि समस्या पर लिखते रहे।

मूनिस ने हिन्दु मुस्लिम एकता पर कई लेख लिखें। उन्होंने चंपारण का इतिहास भी लिखा था, जो आज तक प्रकाशित नहीं हो सका। के0 के0 दत्ता ने कहा कि– ''देश कि स्वतंत्रता के हित में साहस पूर्वक अपनी सेवा आर्पित करने वाले इस उत्साही देशभक्त के बारे में न पुस्तकों में कुछ मिलता है और न ही उनकी रचनाएँ पुस्तकों के रूप में उपलब्ध है'।[10]

आचार्य शिव पूजन सहाय लिखते हैं– 'जब मैं लहेरियासराय (दरभंगा) के पुस्तक भंडार में था, तब लेखों का संग्रह प्रकाशक के पास भेजा था लेकिन 1934 के भूकंप में सब नष्ट हो गया। इस दुधर्टना से वे बड़े दुखी हुए'।

निकर्षतः हम कह सकते है कि पीर मुहम्मद मूनिस एक निडर, साहसी और सच्चे देशभक्त पत्रकार थे। बड़े–बड़े नामों के बीच इस शख्स का नाम इतना दब गया कि अब वह हाशिये पर भी देखने को नहीं मिलता

है– इस यशस्वी स्वाभीमानी पत्रकार का कार्यकलाप सदैव देश वासियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बना रहेगा। 24 दिसम्बर 1948 ई0 को इसकी मृत्यु हो गई। अब जरूरत इस बात की है कि मूनिस जैसे सच्चे देश भक्त के बारे में आगे आकर और अधिक काम करने कि आवश्यकता है, ताकि आने वाले पीढ़ी को यह पता चल सके कि हमारे आस–पास के क्षेत्रों में भी ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो सीधे–सीधे ब्रिटिश हूकुमत से टकराये थे।

संदर्भ–

1. चंपारण में किसान आंदोलन और गांधी– हरिश्चन्द्र चौधरी।
2. सत्य के साथ मेरे प्रयोग–आत्मकथा– महात्मा गांधी।
3. पीर मुहम्मद मुनिस कलम का सत्याग्रही– श्रीकांत।
4. बिहार साहित्य की प्रगति– बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना।
5. पीर मुहम्मद मुनिस कलम का सत्याग्रही– श्रीकांत।
6. सामाजिक परिर्वतन के कुछ आयाम– श्रीकांत एवं प्रसन्न कुमार चौधरी।
7. बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, खंड–1– के0 के0 दत्ता।
8. पीर मुहम्मद मुनिस कलम का सत्याग्रही– श्रीकांत, 'प्रताप' 3 अप्रैल 1916।
9. पीर मुहम्मद मुनिस कलम का सत्याग्रही– श्रीकांत (मरसर की 12 सितंबर, 1917 का आयुक्त को पत्र पॉलिटिकल स्पेशल फाईल न. 1917 ऑफ 1917 पार्ट 2 मिश्रा 335)
10. हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन बिहार, पटना 1957– के0 के0 दत्ता।

Cite this Article-

'डॉ0 संजय कुमार सहनी', 'पीर मुहम्मद मूनिस– एक गुमनाम पत्रकार', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:05, May 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i5001

Published Date- 03 May 2025